PUNE RESEARCH SCHOLAR ISSN 2455-314X
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY JOURNAL VOL 2, ISSUE 3

मंजुल भगत जी के साहित्य में मानवीय संवेदना

प्रा. प्रशांत दत्तात्रय पात्रे
(हिंदी - विभाग)
शिवजागृती महाविद्यालय, नळेगाव महाराष्ट्र

प्रस्तुत प्रबंध का प्रतिपाद्य महिला कहानीकार मंजुल भगत के कहानियो के मानवीय संवेदनाओं का विश्लेषण है । पुरूष और स्त्री सृष्टि के निर्माण और संचलन के दो मुलभूत तत्व है, पर पुरूष की संवेदनाओं को प्रधानता दी गयी है । स्त्री संवेदनाओं को केवल पुरूष संवेदनाओं की प्रतिछाया माना गया है । प्राचीन काल में स्त्री का केवल परिवार और गृहस्थी ही कार्यक्षेत्र था । स्त्री को कोई अधिकार प्राप्त नही था। स्त्री जीवन की सार्थकता उसके पत्नी व माता रूप में ही देखी जाती थी । इस प्रकार भेदभाव की स्थिती पहले से ही विद्यमान थी । ज्यों समाज सभ्य होता गया, पुरूष, परिवार एवं समाज की प्रमुख शक्ति बनता गया और स्त्री आग्रिता बन गयी । इन प्रक्रिया में नारी की स्वतंत्रता उसका सम्मान व उसकी अस्मिता महत्वहीन बनती गई । विकास की विविध स्थितियाँ पारकर आज नारी उन्नत स्थिती पर स्थापित होने का प्रयास कर रही है । किंतू उसके विषय में परंपरागत मान्यताओं के आधारपर ही उसके संवेदनाओं की भावभूमि निश्चित की गई है ।

हिंदी कहानी साहित्य ने स्त्री के स्वतंत्र्य व्यक्तित्व को प्रतिष्ठान करने में महत्वपुर्ण भुमिका निभाई है। इस दृष्टि से हिंदी की महिला कहानीकार मंजुल भगतजीने नारीवादी दृष्टि प्रस्तुत करने में सबसे अधिक सफलता मिली है । भगतजीने आपनी कहानियों द्वारा नारीजीवन के अत्यंत प्रभावशाली और सजीव चित्र प्रस्तुत किए है । पुरूष नारी स्वभाव का केवल दृष्टा मात्र है । दर्शन केवल देखी और सुनी बातों का ही वर्णन कर सकता है । अनुभूती का अभाव होने के कारण उसके चित्रों में वह तन्मयता नही आ सकी है जो नारी संवेदना में आनी संभव है । मंजुल भगतजी ने भारतीय नारी जीवन से विसंगतियों एवं विषमताओं को दूर करणे के लिए आपनी भूमिका सृष्टि और दृष्टि की बनाई है । मंजूल भगत के कहानियों समस्या मुलकता और समस्याओं की

(JOURNAL IMPACT FACTOR 2.46) INDEXED, PEER-REVIEWED / REFEREED JOURNAL
VOL 2, ISSUE 3 www.puneresearch.com/scholar June – July 2016

संवेदनाओं को प्रस्तुत किया गया है । भगतजी की कहानियों में प्रमुख रूप से भारतीय नारी की मुल चेतना को प्रभावशाली ढंग से चित्रित किया गया है ।

मंजुल भगत ने कुछ ऐसी समस्याओं का भी चित्रण किया है जो युगीन स्थितियों से उत्पन्न हुई है । नारी अपनी स्वतंत्रता के प्रति अधिक समग दिखाई देती है । मंजुल भगत भगत की कहानियों में वर्णित नारी का स्वरूप मानवीय संबंधो को नई व्याख्या प्रस्तुत करता है । भगतजी ने रूढियों का प्रखर विरोध किया है । विवाह के प्रति नये विचारों का चित्रण इनकी कहानियों में दिखाई देती है । स्त्रियों की सभी संवेदनाओं को स्वाभाविक एवं सहज रूप में भगतजी की कहानियों में देखा जा सकता है । इनकी कहानियों में स्त्री के स्वतंत्र्य व्यक्तिमत्व को स्थापित किया गया है । अर्थिक परवलंबन के कारण ही स्त्री अपने अधिकारों से वंचित रही और पुरूष द्वारा शोषीत होती रही है । आर्थिक स्वतंत्राने उसे समानता और सजगता की नई दृष्टि प्रदान की है । इस तरह महिला कहानीकार मंजुल भगत ने स्वानुभव और स्वचिंतन द्वारा हिंदी कहानियों में अपनी नई धारणाओं को स्थापित किया । स्त्रि संवेदनायें पुरूष संवेदनाओं की राह पर नही चली बल्की मंजुल भगतजी ने कहानियों में संवेदनाओ की दिशा का नया मोड दिया है ।

मंजुल भगत ने अपनी कहानियों में प्रस्तुत स्त्रियों की दृष्टि द्वारा यह बताने का प्रयास किया है कि परंपरागत सामाजिक मुल्य नारी की नई जीवन दृष्टि में निरर्थक सिध्द होने लगे है । जहाँ कही स्त्री के लक्ष की पूर्ति में समाज बाधक बना है वहाँ नारी समाज का विरोध करने लगी है । वैज्ञानिक तर्क ने नारी को रूढियों से उपर उठकर सोचने विचारने के लिए बाध्य किया है । इस प्रकार स्त्रियों ने स्वतंत्र्य अस्तित्व पाने की कोशिश की है । स्वयं का व्यक्तित्व विकास यही स्वतंत्र्य अस्तित्व का अर्थ स्पष्ट होता दिखाई देता है । मंजुल भगत ने अपने कहानियों के माध्यम से अभूतपूर्व योगदान दिया है ।

मंजुल भगतजी ने आपनी कहानियों में परंपरा एवं रूढियों को तोडती, व्यक्तिगत स्वतंत्रता के लिए जुजती अपने प्रयासो में सफल होती, नई मुख्यों को आत्मसात करती स्त्री की मानसिक संवेदनाओं का चित्रण किया है । परिवर्तीत नारी चेतना का सशक्त चित्रण इनके कहानियों में हुआ है । इस प्रकार प्रस्तुत कहानियों में नारी को पांरपारीक, रूढियों , अंधविश्वासो, मान्यताओ के शोषण से मुक्त कर उसकें स्वतंत्र व्यक्तित्व को समाज में प्रतिष्ठित करने का प्रयास मंजुल भगतजी ने संकेत किया है । भगतजी के कहानियों में उत्पन्न महिलाओं की संवेदनाओं के कारण

चिंतन के विभिन्न आयामों तथा बदलते स्त्री पुरष संबंधो परिवर्तीत सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, पांरपारिक, शैक्षणिक मुल्यों की चर्चा की गई है । उपरोक्त के साथ मानसिक धरातलो पर किए गए नारी शोषण तत्पश्चात नारी पात्रों में जागृत चेतना व परिस्थितियों से संघर्षरत रूप को मंजुल भगतजी की कहानियों में प्रस्तुत किया गया है ।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

१) कहानी , स्वरूप और संवेदना - राजेंद्र यादव

२) हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास – डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी

३) कहानी की संवेदनशीलता – डॉ. भगवानदास वर्मा

४) समकालीन परिवेश और प्रासंगिक रचना संदर्भ – डॉ.हजारे अशोक

५) बावन पत्ते और एक जोकर - मंजुल भगत

६) पाव रोटी और कटलेट्स - मंजुल भगत

७) सफेद कौआ - मंजुल भगत